

यूरोप में शरणार्थी संकट: कारण, प्रभाव और नीतिगत प्रक्रियाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. सचिन पाठक

असि. प्रो० राजनीति विज्ञान विभाग

आर.एम.पी.(पी.जी.) कॉलेज, सीतापुर

सारांश

यूरोप में शरणार्थी संकट 21 वीं सदी की सबसे जटिल मानवीय और राजनीतिक चुनौतियों में से एक के रूप में खड़ा है, जो युद्ध, उत्पीड़न, सामाजिक-आर्थिक अस्थिरता और जलवायु परिवर्तन से प्रेरित विस्थापन की लगातार लहरों से आकार लिया है। यह शोध-पत्र यूरोप में शरणार्थी आंदोलनों के ऐतिहासिक विकास का पता लगाता है। इसमें द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के विस्थापनों और शीत युद्ध की उथल-पुथल से तथा सीरिया, अफगानिस्तान, सूडान और यूक्रेन से उत्पन्न समकालीन संकटों का विश्लेषण शामिल है। 2025 तक के अद्यतन आंकड़ों का उपयोग करते हुए, यह यूरोप की भूमिका को एक आश्रय और एक विवादित स्थान दोनों के रूप में उजागर करता है, जहाँ केवल जर्मनी ही 2.7 मिलियन शरणार्थियों की मेजबानी कर रहा है। यह अध्ययन आर्थिक और सामाजिक प्रभावों की जाँच करता है, जिससे पता चलता है कि जहाँ अल्पकालिक राजकोषीय दबाव महत्वपूर्ण बने हुए हैं, वहीं दीर्घकालिक जनसांख्यिकीय और श्रम बाजार लाभ तेजी से स्पष्ट हो रहे हैं। साथ ही, एकीकरण की कठिनाइयाँ, जेनोफोबिया और प्रवास का राजनीतिकरण यूरोपीय राजनीति को नया रूप दे चुके हैं। जर्मनी, ग्रीस और इटली के केस स्टडीज विभिन्न राष्ट्रीय अनुभवों को दर्शाते हैं, जो यूरोपीय संघ की शरण प्रणाली में संरचनात्मक असमानताओं को प्रतिबिंबित करते हैं। प्रवासन और शरण पर ईयू संधि की एक आलोचनात्मक समीक्षा इसके व्यापक एकीकरण पर सीमा सुरक्षा को प्राथमिकता देने को रेखांकित करती है। यह शोध-पत्र निष्कर्ष के रूप में सतत सुधारों की सिफारिश करता है, जो न्यायसंगत बोझ-साझाकरण, क्षेत्रीय एकजुटता और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ उन्नत सहयोग पर जोर देते हैं, ताकि तत्काल मानवीय आवश्यकताओं और विस्थापन के गहरे कारणों दोनों का समाधान किया जा सके।

परिचय

यूरोप लंबे समय से हिंसा और उत्पीड़न से भाग रहे लोगों के लिए एक गंतव्य के रूप में कार्य करता रहा है, लेकिन 21वीं सदी में शरणार्थियों के प्रवाह की व्यापकता और स्थायित्व ने इसे वैश्विक प्रवासन बहसों का केंद्र बना दिया है। सितम्बर 2025 तक, महाद्वीप अब भी कई संकटों के झटकों से जूझ रहा है जैसे सीरियाई गृहयुद्ध, अफगानिस्तान में तालिबान की सत्ता में वापसी, सूडान में गृह संघर्ष, और यूक्रेन पर रूस का आक्रमण। ये परस्पर जुड़े हुए संकट न केवल यूरोप की प्रशासनिक और वित्तीय क्षमता पर दबाव डाल रहे हैं, बल्कि इसकी राजनीतिक संरचना को भी नया आकार दे रहे हैं, जिससे संप्रभुता, बहुसांस्कृतिकता और स्वयं यूरोपीय संघ के भविष्य पर बहसों तेज हुई हैं।

“शरणार्थी संकट” शब्द अक्सर भूमध्य सागर में भीड़भाड़ वाली नौकाओं या यूरोप की परिधियों पर अस्थायी शिविरों की मार्मिक छवियों को जगाता है। फिर भी, यह परिघटना इससे कहीं अधिक व्यापक है, जिसमें मानवाधिकार, आर्थिक एकीकरण, जनसांख्यिकीय परिवर्तन और अंतरराष्ट्रीय कानून जैसे प्रश्न शामिल

हैं। यूएनएचसीआर (2025) के अनुसार, वर्ष 2024 के अंत तक वैश्विक स्तर पर जबरन विस्थापन 123.2 मिलियन तक पहुँच गया था, जिसमें डब्ल्यूएचओ यूरोपीय क्षेत्र में 13.2 मिलियन शरणार्थी, शरण-प्रार्थी और आंतरिक रूप से विस्थापित लोग रह रहे थे, जिनमें से लगभग 40% बच्चे थे। यूरोप की तुलनात्मक संपन्नता के बावजूद, राजनीतिक विवाद कई निम्न- और मध्यम-आय वाले राज्यों की तुलना में अधिक तीव्र रहा है, जबकि यही देश दुनिया के अधिकांश विस्थापित जनसंख्या की मेजबानी करते हैं।

यूरोप की शरणार्थी नीतियाँ 1951 शरणार्थी कन्वेंशन के बाद से काफी विकसित हुई हैं, जो मूल रूप से केवल द्वितीय विश्व युद्ध से विस्थापित यूरोपियों पर लागू होती थीं। इसके बाद के दशकों में आतंजक की आवर्ती लहरें देखने को मिलीं, उदाहरण के लिए 1956 का हंगरी संकट, 1990 के दशक के बाल्कन युद्ध, और 2015 का सीरियाई प्रवाह, जब एक ही वर्ष में एक मिलियन से अधिक शरण-प्रार्थियों ने यूरोप में प्रवेश किया। 2022 में यूक्रेन पर रूस के आक्रमण ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप में सबसे तेजी से बढ़ते शरणार्थी आंदोलन को जन्म दिया, जिसमें 2025 के मध्य तक पाँच मिलियन से अधिक यूक्रेनवासी पूरे महाद्वीप में रह रहे थे। इसी समय, 2025 की शुरुआत में अनियमित आगमन 30% घट गया, जो कड़े सीमा प्रवर्तन को दर्शाता है, लेकिन साथ ही मानवीय चिंताओं को भी बढ़ाता है।

यह शोध-पत्र यूरोप में शरणार्थी संकट का एक व्यापक विवरण प्रदान करने का प्रयास करता है। यह सबसे पहले शरणार्थी आंदोलनों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का पता लगाकर आगे बढ़ता है, इसके बाद वर्तमान आँकड़ों और प्रवृत्तियों का आकलन करता है। फिर यह आर्थिक और सामाजिक प्रभावों की जाँच करता है, जिसे जर्मनी, ग्रीस और इटली के केस स्टडीज से पूरित किया गया है, और अंत में ईयू-स्तरीय नीतिगत प्रतिक्रियाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है। यह विश्लेषण यूएनएचसीआर के आँकड़ों, यूरोपीय आयोग की रिपोर्टों और विद्वतापूर्ण साहित्य पर आधारित है, जबकि प्रवासन से संबंधित राजनीतिक संवेदनशीलताओं के प्रति सजग भी रहता है। अंततः, प्रस्तुत तर्क यह है कि यद्यपि शरणार्थियों का प्रवाह निस्संदेह अल्पकालिक चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है, लेकिन यदि ऐसी नीतियों द्वारा समर्थित हो जो सुरक्षा-केन्द्रित दृष्टिकोण के बजाय एकीकरण और समानता को प्राथमिकता देती हैं, तो ये प्रवाह दीर्घकालिक लाभ भी लेकर आते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

यूरोप में शरणार्थी आंदोलनों का इतिहास महाद्वीप की भू-राजनीतिक उथल-पुथलों से गहराई से जुड़ा हुआ है। 20वीं सदी की शुरुआत से लेकर आज तक, लगातार उत्पन्न हुए संकटों ने बड़े पैमाने पर जनसंख्या विस्थापन किए हैं, जिनमें से प्रत्येक ने यूरोप के शरण और संरक्षण के दृष्टिकोण को आकार दिया है।

प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) के दौरान लगभग 1.5 करोड़ लोग विस्थापित हुए, जिनमें अर्मेनियाई भी शामिल थे, जो ओटोमन साम्राज्य के तहत नरसंहार से भाग रहे थे। युद्ध-बीच की अवधि ने और भी जबरन प्रवासन देखे, जिनमें सबसे उल्लेखनीय 1923 का ग्रीक-तुर्की जनसंख्या विनिमय था, जिसने लाखों लोगों को विस्थापित किया और जातीय-आधारित प्रवासन की प्रथा को संस्थागत बना दिया।

द्वितीय विश्व युद्ध की तबाही ने यूरोप के इतिहास में सबसे बड़ा विस्थापन उत्पन्न किया, जिसमें 6 करोड़ से अधिक लोग युद्ध, जातीय उत्पीड़न और सीमाओं के पुनर्निर्धारण के कारण मजबूरन स्थानांतरित हुए। होलोकॉस्ट और पूर्वी यूरोप से जातीय जर्मनों का सामूहिक निष्कासन युद्धोत्तर उथल-पुथल के पैमाने का उदाहरण थे। इन अनुभवों ने 1951 शरणार्थी कन्वेंशन की नींव रखी, जिसने शरणार्थियों की कानूनी परिभाषा को संहिताबद्ध किया और बुनियादी अधिकार स्थापित किए, यद्यपि प्रारंभ में इन्हें केवल यूरोपियों तक सीमित रखा गया।

शीत युद्ध युग ने नए आयाम प्रस्तुत किए। 1956 की हंगेरियन क्रांति जैसी घटनाओं ने लगभग 2 लाख लोगों को विस्थापित किया, जिनमें से कई को अमेरिका-प्रमुख “ऑपरेशन सेफ हेवन” जैसे समन्वित अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों के माध्यम से पुनर्वासित किया गया। इसी प्रकार, 1968 के प्राग स्प्रिंग और उसके बाद के सोवियत दमन ने और अधिक प्रवासन को पश्चिम की ओर प्रेरित किया। ये आंदोलन राजनीतिक असहमति और शरणार्थी प्रवाह के अंतर्संबंध को उजागर करते हैं।

1990 के दशक के बाल्कन युद्ध एक और मील का पत्थर साबित हुए। यूगोस्लाविया का विघटन और बोस्निया तथा कोसोवो में जातीय नरसंहार ने 20 लाख से अधिक लोगों को विस्थापित किया। नाटो के हस्तक्षेप और यूरोपीय संघ-नेतृत्व वाले स्थिरीकरण मिशनों ने क्षेत्रीय अस्थिरता के प्रति यूरोप की संवेदनशीलता और सामूहिक प्रतिक्रिया की क्षमता दोनों को उजागर किया।

21वीं सदी ने नए उत्प्रेरक प्रस्तुत किए। अरब स्प्रिंग (2011) और लीबिया में नाटो के हस्तक्षेप ने उत्तर अफ्रीका को अस्थिर कर दिया, जिससे भूमध्य सागर के पार अनियमित प्रवासन मार्ग खुल गए। सीरियाई गृहयुद्ध 2015 का परिभाषित संकट बन गया, जब एक ही वर्ष में मुख्य रूप से ग्रीस और इटली के माध्यम से 10 लाख से अधिक शरण-प्रार्थियों ने यूरोप में प्रवेश किया, इस अभूतपूर्व वृद्धि ने यूरोपीय संघ की शरण प्रणाली की संरचनात्मक कमजोरियों को उजागर किया और राष्ट्रवादी प्रतिक्रियाओं को बढ़ावा दिया।

सबसे हाल ही में, 2022 में यूक्रेन पर रूस के आक्रमण ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप में सबसे तेजी से बढ़ते विस्थापन को जन्म दिया। 2025 के मध्य तक, 50 लाख से अधिक यूक्रेनवासी अस्थायी संरक्षण निर्देश के तहत यूरोपीय संघ के सदस्य राज्यों में रह रहे थे। इस बीच, अफगानिस्तान, सूडान और दक्षिण सूडान में लंबे समय से चले आ रहे संघर्षों ने, जलवायु परिवर्तन के अस्थिरकारी प्रभावों के साथ मिलकर, यूरोप की मानवीय चुनौती को और गहरा बना दिया।

यह ऐतिहासिक अध्ययन दिखाता है कि यूरोप में शरणार्थी संकट कभी अलग-अलग घटनाएँ नहीं रहे, बल्कि युद्ध, राजनीतिक दमन, बाहरी हस्तक्षेप और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं ने आकार दिया है। प्रत्येक चरण ने यूरोप की राजनीतिक इच्छाशक्ति की परीक्षा ली है, और मानवीय मूल्यों और नीतिगत रूझानों के बीच तनाव को उजागर किया है।

वर्तमान स्थिति और आँकड़े:-

सितम्बर 2025 तक, यूरोप में शरणार्थी स्थिति अस्थिर बनी हुई है, जो स्थिरीकरण और उभरते खतरों दोनों से चिह्नित है। यूएनएचसीआर (2025) के अनुसार, 2024 के अंत तक वैश्विक जबरन विस्थापन 123.2 मिलियन तक पहुँच गया, जिसमें डब्ल्यूएचओ यूरोपीय क्षेत्र में 13.2 मिलियन विस्थापित लोग रह रहे हैं।

पाँच सबसे बड़े स्रोत देश—सीरिया, यूक्रेन, अफगानिस्तान, वेनेजुएला और दक्षिण सूडान—यूएनएचसीआर के अधीन लगभग 70% शरणार्थियों के लिए जिम्मेदार हैं। यूरोप विशेष रूप से सीरिया और यूक्रेन से हुए विस्थापन से प्रभावित हुआ है। मई 2025 तक, पूरे महाद्वीप में 50 लाख से अधिक यूक्रेनी शरणार्थियों को दर्ज किया गया, जबकि सीरियाई विस्थापन उच्च स्तर पर जारी है।

प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं:-

- ईयू संरक्षण अनुदान: 2024 में, ईयू सदस्य राज्यों ने 4,37,900 शरण-प्रार्थियों को संरक्षण स्थिति प्रदान की, जो 2023 की तुलना में 6.9% की वृद्धि है (यूरोपीय संसद, 2025)।
- अनियमित आगमन में गिरावट: 2025 की पहली तिमाही में मुख्यतः कड़े ईयू सीमा उपायों के कारण अनियमित सीमा पार करने की घटनाएँ 30% कम हो गईं, (द गार्जियन, 2025)।
- मानवीय जोखिम: कम आगमन के बावजूद, 2025 में भूमध्य सागर में 700 से अधिक मौतें दर्ज की गईं (बीबीसी, 2025)।
- राष्ट्रीय मेजबानी में असमानता: जर्मनी 2.7 मिलियन शरणार्थियों के साथ सबसे आगे है, जबकि पोलैंड ने बड़ी संख्या में यूक्रेन शरणार्थियों को समायोजित किया है। इसके विपरीत, ग्रीस जैसे सीमावर्ती राज्य अपनी जनसंख्या की तुलना में बहुत अधिक आवेदन का सामना कर रहे हैं।

प्रमुख आँकड़े (2025)	मान	स्रोत
वैश्विक जबरन विस्थापन (2024)	123.2 मिलियन	यूएनएचसीआर
डब्ल्यूएचओ यूरोपीय क्षेत्र में शरणार्थी	13.2 मिलियन	डब्ल्यूएचओ
यूरोप में यूक्रेनी शरणार्थी (2025)	5 मिलियन	यूएनएचसीआर और विकिपीडिया
ईयू संरक्षण अनुदान (2024)	4,37,900	यूरोपीय संसद
अनियमित आगमन में गिरावट (Q 1 2025)	30%	द गार्जियन
भूमध्य सागर में मौतें (2025)	700	बीबीसी

ये आँकड़े दिखाते हैं कि भले ही प्रवास का स्तर अब स्थित दिखाई दे रहा हो, लेकिन अंतर्निहित कमजोरियाँ अब भी गंभीर बनी हुई हैं। शरण आवेदन में लंबित मामले, स्थायी राज्यहीनता (वैश्विक स्तर पर

अनुमानित 4.4 मिलियन), और मूल देशों में अस्थिर परिस्थितियाँ इस ओर संकेत करती हैं कि निकट भविष्य में यूरोप विस्थापित जनसंख्या का एक प्रमुख गंतव्य बना रहेगा।

आर्थिक और सामाजिक प्रभाव:-

शरणार्थी संकट ने यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं और समाजों के लिए अल्पकालिक वित्तीय दबाव और दीर्घकालिक संरचनात्मक (श्रम, जनसंख्या और सामाजिक संरचना) अवसर दोनों उत्पन्न किए हैं।

आर्थिक प्रभाव:-

- अल्पकाल में, अचानक शरणार्थी प्रवाह स्वागत, आवास और कल्याण पर खर्चों के माध्यम से सार्वजनिक बजट पर दबाव डालते हैं। आईएमएफ ने उजागर किया है कि 2015 की लहर ने यूरोप की शरण प्रणाली की सीमाओं को सामने ला दिया। हालाँकि दीर्घकाल में, शरणार्थी अक्सर आर्थिक विकास में सकारात्मक योगदान देते हैं। अध्ययनों से संकेत मिलता है कि जब एकीकरण सफल होता है तो शरणार्थियों का प्रवाह प्रति व्यक्ति जीडीपी बढ़ाता है, विशेष रूप से यूरोप की वृद्ध होती आबादी को देखते हुए। उदाहरण के लिए, यूक्रेनी शरणार्थियों के आगमन ने यूरोप की श्रम आपूर्ति को बढ़ाया है, जहाँ महिलाएँ स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा जैसे कमी वाले क्षेत्रों में प्रवेश कर रही हैं।

- अभी भी शरणार्थियों को "आर्थिक बोझ" के रूप में देखने की धारणा बनी हुई है, लेकिन वास्तविक साक्ष्य बताते हैं कि अधिकांश ईयू राज्य शरणार्थियों पर देशज नागरिकों की तुलना में कम खर्च करते हैं। फिर भी, आवास की कमी और बढ़ते किराए कई शहरी केंद्रों में वास्तविक चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

सामाजिक प्रभाव:-

- एकीकरण एक केंद्रीय मुद्दा बना हुआ है। भाषा अवरोध, श्रम बाजार तक पहुँच और आवास की कमी बसावट को जटिल बनाते हैं, जबकि सदस्य राज्यों में असमान नीतिगत समर्थन अलग-अलग परिणाम उत्पन्न करता है।

- राजनीतिक रूप से, शरणार्थियों के प्रवाह ने खासकर 2015 के बाद से दक्षिणपंथी और राष्ट्रवादी आंदोलनों को मजबूत किया है, जिससे प्रवासी-विरोधी भावनाएँ बढ़ी हैं और उदार लोकतांत्रिक मानदंड चुनौती के घेरे में आए हैं।

- साथ ही, सफल एकीकरण सांस्कृतिक विविधता को समृद्ध कर सकता है और वृद्ध होती आबादी को पुनर्जीवित कर सकता है। तुलनात्मक मामलों, जैसे कनाडा द्वारा सीरियाई शरणार्थियों का पुनर्वास, सक्रिय और समावेशी नीतियों के लाभ प्रदर्शित करते हैं।

इन प्रभावों की द्वैध प्रकृति—राजकोषीय दबाव बनाम जनसांख्यिकीय नवीनीकरण, ध्रुवीकरण बनाम समृद्धि यह स्पष्ट करती है कि शरणार्थी नीति यूरोप के सबसे राजनीतिक रूप से विभाजनकारी क्षेत्रों में से एक क्यों बनी हुई है।

शरणार्थी संकट का राजनीतिक प्रभाव

यूरोप में शरणार्थी संकट, जिसे 2015 में सीरिया, अफगानिस्तान और अन्य संघर्ष क्षेत्रों से एक मिलियन से अधिक शरण-प्राथियों के आगमन से सबसे अधिक चिह्नित किया गया, ने महाद्वीप के राजनीतिक ढाँचे पर स्थायी छाप छोड़ी है। यह अभूतपूर्व लहर, जिसे "संकट" के रूप में व्यापक रूप से वर्णित किया गया। भले ही यूरोप का विस्थापित आबादी की मेजबानी का लंबा इतिहास रहा हो लेकिन तत्काल राजनीतिक तनाव भड़काने वाली साबित हुई। संप्रभुता और एकजुटता पर बहसों को तेज किया और ईयू की शरण संरचना की कमजोरियों को उजागर किया। जनमत तेजी से सख्त सीमा प्रबंधन की ओर मुड़ा, जबकि सर्वेक्षणों ने यूरोपीय संस्थानों में घटते विश्वास को उजागर किया, जो मानवीय प्रतिक्रिया के बजाय सुरक्षा पर बढ़ते जोर का संकेत देता है। जर्मनी में, जो संख्यात्मक रूप से सबसे अधिक प्रभावित देश था, चांसलर एंजेला मर्केल की "विलकॉमन्सकल्चर" (खुलेपन की संस्कृति) ने प्रारंभिक उदारता को दर्शाया, लेकिन बाद में इसने महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया उत्पन्न की और दूर-दक्षिणपंथी ऑल्टरनेटिव फॉर जर्मनी (AfD) को प्रवासी-विरोधी भावनाओं को संसदीय प्रतिनिधित्व और कई राज्यों में चुनावी लाभ में बदलने का मार्ग प्रशस्त किया। अग्रिम पंक्ति के देशों जैसे इटली और ग्रीस में, संकट ने नाजुक बुनियादी ढाँचों को अभिभूत कर दिया, अस्थिरता को बढ़ावा दिया और इटली की लीग पार्टी के नेता माटेओ साल्विनी जैसे नेताओं को बंदरगाह बंद करने और प्रतिबंधात्मक निर्वासन उपायों पर केंद्रित लोकलुभावन एजेंडा को आगे बढ़ाने का अवसर दिया।

महाद्वीपीय स्तर पर, इन दबावों ने राजनीतिक ध्रुवीकरण को बढ़ाया। वामपंथी आवाजें प्रवासन को मानवीय और कानूनी दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का प्रयास करती रहीं, जबकि रूढ़िवादी और राष्ट्रवादी ताकतों ने शरणार्थियों को सांस्कृतिक और आर्थिक खतरे के रूप में चित्रित किया। यह विमर्श टकराव ब्रेकिजट जनमत संग्रह (2016) जैसे महत्वपूर्ण घटनाक्रमों से जुड़ा, जहाँ अभियानकर्ताओं ने ईयू की मुक्त आवाजाही को अनियंत्रित प्रवासन से जोड़ा और शरणार्थी प्रवाह से उत्पन्न भय को भुनाया, जबकि रूस के यूक्रेन में हस्तक्षेप जैसे सुरक्षा संबंधी मुद्दों को पीछे छोड़ दिया। इसका असर पूर्वी यूरोप में भी फैल गया, जहाँ हंगरी और पोलैंड की सरकारों ने पुनर्वास कोटे को खारिज कर दिया, बाड़ बनाई और "संप्रभुता" के नाम पर कठोर कानून अपनाए। ऐसे कदमों ने ईयू के भीतर विभाजन को गहरा किया। डबलिन विनियमन की नाजुकता को उजागर किया और बोझ-साझाकरण के समर्थक पश्चिमी यूरोपीय देशों और अतिराष्ट्रीय आदेशों का विरोध करने वाले पूर्वी यूरोपीय राज्यों के बीच खाई चौड़ी कर दी। इस वातावरण ने अधिनायकवादी प्रवृत्तियों को भी पोषित किया, विभाजन की राजनीति को मजबूत किया और राष्ट्रवादी बयानबाजी को और सुदृढ़ किया, जो पहले के यूरोपीय खुलेपन के वादों से बिल्कुल विपरीत था।

संस्थागत स्तर पर, इस संकट के परिणामस्वरूप ईयू की शरण व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन हुए। 2024 में पारित न्यू पैक्ट ऑन माइग्रेशन एंड असायलम ने सदस्य राज्यों से एकजुटता योगदान अनिवार्य करके जिम्मेदारियों का सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया, जबकि असाधारण परिस्थितियों जैसे सीमा संकट या सामूहिक आगमन में अपवाद की अनुमति भी दी। फिर भी, आलोचकों का तर्क है कि यह संधि एक रक्षात्मक बदलाव को दर्शाती है, जो अधिकार-आधारित सुरक्षा की बजाय निवारक उपायों और बाहरीकरण रणनीतियों को प्राथमिकता देती है। यह प्रवृत्ति दूर-दक्षिणपंथी आंदोलनों के चुनावी उदय के समानांतर रही है। फ्रांस की नेशनल रैली से लेकर स्वीडन डेमोक्रेट्स तक जो आगमन में कमी के बावजूद प्रवासन को

लगातार अस्तित्वगत चुनौती के रूप में प्रस्तुत करते हैं। 2022 के यूक्रेनी संकट ने एक विपरीत परत पेश की। यूरोप ने पाँच मिलियन से अधिक यूक्रेनवासियों को समायोजित करने के लिए अस्थायी संरक्षण निर्देश को तेजी से सक्रिय किया, जिससे एकजुटता की क्षमता प्रदर्शित हुई लेकिन साथ ही चयनात्मक सहानुभूति भी सामने आई, क्योंकि मध्य पूर्व या अफ्रीका से आए शरणार्थियों को धीमी प्रक्रियाओं और अधिक शत्रुता का सामना करना पड़ा। इस विरोधाभास ने शरण नीतियों में सांस्कृतिक पदानुक्रम की धारणाओं को और गहरा किया और यूरोप की पहचान और मूल्यों पर बहस को तेज किया।

एक दशक बाद भी, शरणार्थियों के प्रवाह के राजनीतिक प्रभाव यूरोप की युवा पीढ़ी और चुनावी गतिशीलता को आकार दे रहे हैं। युवा पीढ़ियाँ, जिन्हें मितव्ययिता, आतंकवाद और प्रवासन जैसे संकटों ने राजनीतिक रूप से सक्रिय बनाया, बढ़ती भागीदारी तो दिखाती हैं लेकिन मौजूदा संस्थानों से गहरा मोहभंग भी झलकता है, जिससे चुनावों में अस्थिरता बढ़ती है और राष्ट्रवादी संकीर्णता को बढ़ावा मिलता है। समर्थक यह इंगित करते हैं कि शरणार्थी एकीकरण से सांस्कृतिक समृद्धि और जनसांख्यिकीय लाभ मिल सकते हैं, प्रमुख राजनीतिक कथा विभाजन की ही बनी हुई है। राष्ट्रवाद मजबूत हुआ है, सुरक्षा-केन्द्रित नीतियाँ संस्थागत बन गई हैं और एकीकरण अधूरा है। शरणार्थी संकट, जिसे कभी मानवीय परीक्षा माना जाता था, ने इसके बजाय यूरोप को युद्धोत्तर एकजुटता के आदर्शों से दूर ले जाकर एक व्यावहारिक, अक्सर बहिष्कारी, नियंत्रण और रोकथाम की राजनीति की ओर मोड़ दिया है।

केस स्टडी: जर्मनी, ग्रीस, इटली

जर्मनी:

जर्मनी यूरोप में सबसे बड़ी शरणार्थी आबादी का मेजबान है, जो 2025 तक लगभग 2.7 मिलियन है। चांसलर मर्केल की 2015 विलकॉमन्स कल्चर ने खुलेपन की मिसाल कायम की, लेकिन बाद के वर्षों ने रोजगार और आवास में विशेष रूप से एकीकरण की चुनौतियों को उजागर किया। हालाँकि शरणार्थियों ने जीडीपी वृद्धि में योगदान दिया और श्रम की कमी को कम किया, राजनीतिक प्रतिक्रिया ने दूर-दक्षिणपंथी दलों के उदय को हवा दी। आल्टेना जैसे समुदाय सफल एकीकरण का उदाहरण हैं, लेकिन प्रणालीगत चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

ग्रीस:

एक अग्रिम पंक्ति के राज्य के रूप में, ग्रीस अपने संसाधनों की तुलना में असमान रूप से प्रभावित है। केवल मई 2025 में, इसने 3,700 शरण आवेदन दर्ज किए, जो प्रति दस लाख निवासियों पर 358 के बराबर है। एजियन द्वीपों पर भीड़भाड़ वाले शिविर खराब जीवन स्थितियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय आलोचना आकर्षित करते रहते हैं। सीमित वित्तीय क्षमता और भौगोलिक भेद्यता के कारण ग्रीस मजबूत एकीकरण कार्यक्रम लागू करने में बाधित रहता है।

इटली:

ग्रीस की तरह, इटली भूमध्यसागरीय आगमन का प्रबंधन करता है, जिनमें से कई को खतरनाक समुद्री यात्राओं से बचाया जाता है। 2014 से 2017 के बीच प्रवाह ने प्रवासी-विरोधी मंचों पर प्रचार करने वाले लोक-लुभावन दलों के उदय को बढ़ावा दिया। ईयू पुनर्वास योजनाओं के बावजूद, इटली असमान रूप से प्रवेश जिम्मेदारियों को उठाता रहता है और स्वागत केंद्रों में परिस्थितियाँ चुनौतीपूर्ण बनी रहती हैं। देश का अनुभव ईयू की एकजुटता तंत्र की अपर्याप्तताओं को उजागर करता है।

सामूहिक रूप से, ये मामले यूरोप में जिम्मेदारियों के विषम वितरण को उजागर करते हैं। अग्रिम पंक्ति के राज्य गंभीर दबाव में तत्काल आगमन का प्रबंधन करते हैं, जबकि जर्मनी जैसे गंतव्य राज्य एकीकरण की दीर्घकालिक लागत और अवसर वहन करते हैं।

यूरोपीय संघ की नीतियाँ और चुनौतियाँ

कॉमन यूरोपियन असाइलम सिस्टम (CEAS) पूरे यूरोपीय संघ में शरणार्थी प्रबंधन के लिए ढांचा प्रदान करता है, लेकिन इसका मुख्य आधार, डब्लिन रेगुलेशन, लंबे समय से ग्रीस और इटली जैसे प्रथम-प्रवेश राज्यों पर अनुचित बोझ डालने के लिए आलोचना का शिकार रहा है।

2024 में, यूरोपीय संघ ने पैक्ट ऑन माइग्रेशन एंड असाइलम को अपनाया, जिसे एकजुटता और जिम्मेदारी के बीच संतुलन बनाने के लिए डिजाइन किया गया था। इसकी मुख्य विशेषताएँ शामिल हैं:—

- कड़ी सीमा नीतियों में तेज शरण प्रक्रिया (फास्ट ट्रेक) और विस्तारित निरोध उपाय शामिल हैं।
- एकजुटता तंत्र, जो राज्यों को या तो पुनर्वासित शरणार्थियों को स्वीकार करने या वित्तीय योगदान देने ("लचीली एकजुटता") की अनुमति देता है।
- बाह्यकरण को बढ़ावा, जिसके तहत प्रवाह को यूरोप पहुँचने से पहले प्रबंधित करने के लिए गैर-ईयू राज्यों के साथ समझौते किए गए।

आलोचक तर्क देते हैं कि ये सुधार मानवीय संरक्षण की तुलना में सीमा सुरक्षा पर अधिक जोर देते हैं, जिसके परिणामस्वरूप लंबे समय तक निरोध, प्रक्रियात्मक सुरक्षा में कमी और प्रवासियों के लिए बढ़ते जोखिम होते हैं। मानवाधिकार संगठन चेतावनी देते हैं कि सुरक्षा-केन्द्रित दृष्टिकोण यूरोपीय संघ की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं को कमजोर करता है।

राजनीतिक स्तर पर, प्रवासन ने सदस्य राज्यों के बीच तीव्र विभाजन को हवा दी है, जहाँ पूर्वी यूरोपीय सरकारें पुनर्वास कोटा का विरोध करती हैं और दक्षिणपंथी आंदोलन प्रतिबंधात्मक उपायों की वकालत करते हैं। सार्वजनिक बहसों तेजी से प्रवासन को मानवाधिकारों के बजाय राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से प्रस्तुत करती हैं, जिससे सामूहिक समाधान की कोशिशें जटिल हो जाती हैं।

निष्कर्ष

यूरोप में शरणार्थी संकट कोई आकस्मिक आपात स्थिति नहीं है, बल्कि युद्ध, दमन और असमानता से आकार ली गई विस्थापन की एक लंबी ऐतिहासिक निरंतरता का हिस्सा है। वर्तमान प्रवृत्तियाँ स्थायी कमजोरियों—सीरिया और यूक्रेन में जारी संघर्षों से लेकर जलवायु—संबंधी खतरों तक—और श्रम बाजारों और जनसांख्यिकीय नवीनीकरण में शरणार्थी एकीकरण के संभावित दीर्घकालिक लाभों दोनों को प्रदर्शित करती हैं। फिर भी, यूरोप की नीतिगत प्रतिक्रियाएँ असमान बोझ—साझाकरण, सीमा सुरक्षा पर अत्यधिक जोर और प्रवासन के राजनीतिकरण से बाधित रहती हैं। ईयू पैक्ट ऑन माइग्रेशन एंड असाइलमसुधार का एक प्रयास दर्शाता है, लेकिन जब तक इसे मजबूत एकीकरण रणनीतियों के साथ नहीं जोड़ा जाता, तब तक यह असमानताओं को बनाए रखने का जोखिम उठाता है।

आगे बढ़ते हुए, प्रभावी समाधान के लिए आवश्यक हैं:

1. ईयू सदस्य राज्यों के बीच समान बोझ—साझाकरण, जिससे अग्रिम मोर्चे और गंतव्य देशों पर दबाव कम हो।
2. रोजगार, शिक्षा और आवास में विशेष रूप से उन्नत एकीकरण नीतियाँ बनाई जाएं।
3. विस्थापन के मूल कारणों को संबोधित करना, जिनमें संघर्ष समाधान, जलवायु अनुकूलन और उत्पत्ति व पारगमन देशों के साथ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग शामिल हैं।

मानवीय दायित्वों और दीर्घकालिक संरचनात्मक योजना के बीच संतुलन बनाकर, यूरोप शरणार्थी संकट को एक संभावित दायित्व से नवीनीकरण के अवसर में बदल सकता है, साथ ही अंतरराष्ट्रीय कानून और मानवाधिकारों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि कर सकता है।

संदर्भ:—

- UNHCR. (2025). *Refugee Statistics*. Retrieved from <https://www.unhcr.org/refugee-statistics/>
- European Commission. (2025). *Migration and Asylum Policies*. Retrieved from https://home-affairs.ec.europa.eu/policies/migration-and-asylum_en
- European Parliament. (2025). *Asylum Statistics*.
- BBC News. (2025). *Mediterranean Migrant Deaths*.
- The Guardian. (2025). *Irregular Migration Trends*.
- UNHCR. (2024). *Global Trends: Forced Displacement in 2023*. Geneva: UNHCR.
- OECD. (2022). *International Migration Outlook 2022*. OECD Publishing.
- IOM. (2023). *World Migration Report 2022*. International Organization for Migration.
- European Council on Refugees and Exiles (ECRE). (2024). *Comments on the New Pact on Migration and Asylum*. Brussels: ECRE.
- Amnesty International. (2023). *Europe: Fortress Europe: Human Rights Abuses against Refugees and Migrants*. London: Amnesty International.